



एरा यूनिवर्सिटी

पढ़ाई से मेडिकल रिसर्च तक एआई की उपयोगिता बताई

लखनऊ (सं)। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) शिक्षा, चिकित्सा और शोध के क्षेत्र में काम करने के तरीकों को तेजी से बदल रहा है। इसका सही इस्तेमाल न केवल समय बचा सकता है, बल्कि जटिल जानकारी को समझने और शोध को अधिक व्यवस्थित बनाने में भी मददगार हो सकता है। हालांकि, एआई से मिली जानकारी की विश्वसनीयता जांचना और नैतिक मानकों का पालन करना भी जरूरी है। इसी उद्देश्य से सोमवार को एरा यूनिवर्सिटी में छात्रों और शिक्षकों के लिए एक दिवसीय सेमिनार आयोजित किया गया।

विश्वविद्यालय के लिबरल एजुकेशन विभाग और एनईपी सार्थी

एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन

के सहयोग से मिनी ऑडिटोरियम में आयोजित इस कार्यक्रम में एआई टूल्स और जनरेटिव एआई तकनीक के व्यावहारिक उपयोगों पर चर्चा हुई। कार्यक्रम का संचालन एनईपी कोऑर्डिनेटर प्रो. शीवा रिजवी ने किया। सेमिनार के पहले सत्र में एरा यूनिवर्सिटी के न्यूरोलॉजी विभागाध्यक्ष प्रो. आरके गर्ग ने चिकित्सा क्षेत्र में एआई की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि एआई की मदद से मेडिकल जर्नल्स की जानकारी जुटाने, शोध पत्रों का सारांश तैयार करने और वैज्ञानिक



साहित्य की समीक्षा करने जैसे कार्यों में सहायता मिल सकती है।

उन्होंने मरीजों की गोपनीयता, विश्वसनीय चिकित्सा स्रोतों से तथ्यों के सत्यापन और चिकित्सकीय

निर्णयों में मानवीय विवेक बनाए रखने पर जोर दिया। दूसरे सत्र में जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली के कंप्यूटर साइंस विभाग के प्रो. मंसफ आलम ने जनरेटिव एआई

के उपयोगों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इन टूल्स से अध्ययन सामग्री, प्रेजेंटेशन, क्विज, मूल्यांकन और शिक्षण संसाधन तैयार करने में मदद मिल सकती है। इनके जरिए

जटिल विषयों को सरल बनाने और कक्षा में पढ़ाई को अधिक रोचक बनाने के तरीकों पर भी चर्चा हुई।

वक्ताओं ने कहा कि एआई शिक्षकों और विद्यार्थियों की कार्यक्षमता बढ़ाने का उपयोगी माध्यम है, लेकिन इसे मानवीय समझ और पेशेवर निर्णय का विकल्प नहीं मानना चाहिए। सामग्री की सटीकता जांचने और अकादमिक ईमानदारी बनाए रखने की जरूरत भी रेखांकित की गई। कार्यक्रम में लिबरल एजुकेशन और कंप्यूटर साइंस के विद्यार्थियों ने भाग लिया। सेमिनार का उद्देश्य नई तकनीक के प्रति जागरूकता बढ़ाने के साथ एआई के जिम्मेदार और प्रभावी इस्तेमाल को प्रोत्साहित करना रहा।